श्रीं

COCO

श्रीफल

Magic

SAMBRANI CUPS

INSTANT BURN IN 10 SECONDS

ABOUT *US*

श्री अमित गोयल एक सफल व्यवसायी हैं, जिनके पास रियल एस्टेट, सेल्स एंड मार्केटिंग, बैंकिंग सर्विसेज, फूड बिजनेस जैसे उद्योग क्षेत्रों में २० से अधिक वर्षों का अनुभव है। वह विविधता और प्रतिबद्धताओं वाले व्यक्ति हैं जो उन्हें SMOK-KING के उनके सफर पर ले जाता है। उन्हें यह विचार तब आया जब उन्हें इस बाजार में कोई विकल्प या गुणवत्ता विभाजन न होने की अंतिम ग्राहक दुविधा का एहसास हुआ। श्री अमित को SMOK-KING पर भरोसा है - एक अद्वितीय और लक्जरी चारकोल ब्रिकेट्स वह समाधान है जहां उपभोक्ता को चुनने के लिए कुछ प्रीमियम विकल्प मिलते हैं।

SMOK-KING भारत से एक नारियल चारकोल ब्रिकेट आपूर्तिकर्ता और निर्माता है। हम उच्च गुणवत्ता वाले कच्चे माल के साथ विभिन्न नारियल चारकोल उत्पादों का निर्माण करने वाली कंपनी हैं १०० प्रतिशत प्रीमियम गुणवत्ता वाले नारियल के खोल के कोयले और एक सख्त नियंत्रित उत्पादन प्रक्रिया का उपयोग करके, हम पूरे भारत और भारत और मध्य पूर्व सहित दुनिया भर के ५ से अधिक देशों में अपने वितरण का विस्तार कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त, हम अपने शीशा चारकोल फैक्ट्री में बड़े पैमाने पर उत्पादन क्षमता के साथ प्रीमियम चारकोल ब्रिकेट का उत्पादन करते हैं और आपको लंबे समय तक जलने, उच्च कैलोरी और कम राख सामग्री वाले चारकोल की विशेषताओं के साथ सर्वोत्तम गुणवत्ता प्रदान करते हैं। नतीजतन, हमारे ब्रिकेट शीशा और ठठफ जलाने के लिए उपयुक्त हैं। ब्रिकेट की गुणवत्ता को हमेशा प्राथमिकता दी गई है, क्योंकि हमें विश्वसनीय और भरोसेमंद उत्पाद प्रमाणन परीक्षण द्वारा समर्थित किया गया है।

AMITT GOEL
(FOUNDER & CEO)

ABOUT COCONUT

।। पृथ्वी पर नारियल कैसे पहुंचा ।।

देवी-देवताओं जितना पवित्र ये फल भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी पृथ्वी लोक पर लेकर आए। पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब पृथ्वी पर विष्णु भगवान अवतरित हुए तो उनके साथ माता लक्ष्मी भी आईं। मां लक्ष्मी अपने साथ नारियल का पेड़ और कामधेनू गाय लेकर आयीं थी। नारियल के वृक्ष को कल्पवृक्ष भी कहते हैं। नारियल को साक्षात भगवान के रूप में भी कई जगहों पर पूजा जाता है।

।। नारियल का महत्व ।।

हिंदू धर्म में जब भी कोई पूजा-पाठ या शुभ-मांगलिक कार्यों का आयोजन होता है तो नारियल का इस्तेमाल जरूर किया जाता है। नए दुकान का शुभारंभ हो, शादी-विवाह, नया वाहन, गृह प्रवेश, तीज-त्योहार और साप्ताहिक व्रत आदि से लेकर सभी मौके पर नारियल का महत्व होता है। नारियल को या तो फोड़ा जाता है या चढ़ाया जाता है।

हिंदू धर्म से जुड़े लगभग सभी देवी-देवताओं को नारियल चढ़ाए जाते हैं और पूजा सामग्री में नारियल को जरूर शामिल किया जाता है। क्योंकि इसके बिना पूजा अधूरी होती है।

।। त्रिदेव शक्ति ।।

नारियल **ब्रह्मा (निर्माता), विष्णु (रक्षक)** और **महेश (संहारक)** की हिंदू त्रिमूर्ति का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए, इसका महत्व है। भक्त नारियल को पूजा की वस्तु मानकर तीनों देवताओं को श्रद्धांजलि देते हैं। इस प्रकार, वे त्रिदेवों का आशीर्वाद चाहते हैं।

पौराणिक मान्यता के अनुसार, इसमें त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश का वास होता है। नारियल पर बने छेद की तुलना तो शिवजी के नेत्र से की जाती है और लगभग सभी पूजा-पाठ में इसका इस्तेमाल होता है।

एक बार विश्वामित्र इन्द्र से रुष्ट हो गए और दूसरे स्वर्ग लोक का निर्माण करने लगे। दूसरी सृष्टि का निर्माण करते हुए उन्होंने मानव के रूप में नारियल का निर्माण किया। इसलिए नारियल के खोल पर बाहर दो आंखें और एक मुख की रचना है।

जानें क्यों भगवान को नारियल चढ़ाया जाता है और हिंदू रीति-रिवाजों में इसका इतना महत्व क्यों है।

नारियल हिंदू पूजा, त्यौहार, विवाह समारोह और अन्य आध्यात्मिक, धार्मिक आयोजनों का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है।

देवतामुख्य बातें **नारियल** को **श्री फल या दिव्य फल** या **भगवान का फल** कहा जाता हैयह हिंदू परंपराओं और रीति-रिवाजों का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा हैविभिन्न कारणों से नारियल हमारी परंपराओं का एक अविभाज्य हिस्सा है।

नारियल हिंदू पूजा और अनुष्ठानों का एक अनिवार्य हिस्सा है। इसे कलश (पानी से भरा और पूजा के दौरान) पर रखा जाता है और वेदी पर भी एक पवित्र स्थान मिलता है। इसके अलावा, मंदिरों में अर्चना थाल (विभिन्न प्रसाद से युक्त थाली) में भी नारियल होता है।

विभिन्न कारणों से नारियल हमारी परंपराओं का अभिन्न अंग है। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं

नारियल में तीन बिंदु भगवान शिव की तीन आँखों का प्रतीक हैं। एक अन्य विश्वास प्रणाली यह भी बताती है कि गिरी (सफेद मांस) देवी पार्वती का प्रतीक है, पानी गंगा का प्रतीक है, और भूरा खोल भगवान कार्तिकेय का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए, इसका महत्व है।

।। मानव सिर ।।

नारियल की तुलना मानव सिर से भी की जाती है। रेशा बाल है, खोल खोपड़ी है, पानी रक्त है, और मांस मस्तिष्क का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए, नारियल चढ़ाने से भक्त खुद को या मन को समर्पित कर देता है और सर्वोच्च शक्ति के सामने झुक जाता है।

।। अहंकार का प्रतीक ।।

ऐसा कहा जाता है कि नारियल का खोल अहंकार का प्रतिनिधित्व करता है, नरम गूदा वाला हिस्सा मानव हृदय है, और पानी पवित्रता का प्रतीक है। इसलिए, एक भक्त भगवान की कृपा का अनुभव तभी कर सकता है जब वह अपना अहंकार तोड़ दे और शुद्ध हृदय से सर्वशक्तिमान के सामने आत्मसमर्पण कर दे। इस प्रकार, यह हमें याद दिलाता है कि अहंकार हमें अपने आस-पास की अच्छाई को अपनाने से रोकता है। इसलिए, यह हमें अज्ञानता से छुटकारा पाने और ज्ञान (भगवान) को अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

।। समृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है ।।

नारियल पूरे साल उपलब्ध रहता है और यह सबसे आसानी से उपलब्ध प्राकृतिक उत्पादों में से एक है। इसलिए, यह समृद्धि का प्रतीक है।

मंदिरों में नारियल का उपयोग क्यों किया जाता है?

नारियल चढ़ाना भगवान को खुद को अर्पित करने का प्रतीक है। ऐसा माना जाता है कि इससे धन संबंधी सभी समस्याएं दूर होती हैं।

ABOUT SAMBRANI

संभ्रानी की उत्पत्ति का पता प्राचीन भारत में लगाया जा सकता है, जहाँ इसे पारंपरिक रूप से धार्मिक अनुष्ठानों और समारोहों में इस्तेमाल किया जाता था।

संभ्रानी शब्द साल के पेड़ से प्राप्त सुगंधित राल को संदर्भित करता है।

संभ्रानी शब्द आयुर्वेद (चिकित्सा की एक प्राचीन प्रणाली) द्वारा पीले राल के लिए गढ़ा गया है, जो गोंद जैसा पदार्थ है जो साल के पेड़ की सुगंधित छाल से प्राप्त होता है।

संब्रानी क्या है?

संब्रानी बेंजोइन का भारतीय नाम है जिसे कभी-कभी गम बेंजोइन भी कहा जाता है, यह एक बाल्समिक राल है जिसे स्टाइरेक्स वंश के कई पेड़ों की छाल से प्राप्त किया जाता है। आयुर्वेद (चिकित्सा की एक प्राचीन प्रणाली) द्वारा पीले राल के लिए संब्रानी शब्द गढ़ा गया है, जो गोंद जैसा पदार्थ है जो साल के पेड़ की सुगंधित छाल से आता है। पेड़ की छाल में चीरा लगाकर पेड़ से रस निकाला जाता है। इस हर्बल राल को फिर एकत्र किया जाता है और छोटे दानों के रूप में संसाधित किया जाता है जिन्हें संब्रानी के क्रिस्टल बनाने के लिए जोर से दबाया जाता है। चारकोल टैबलेट पर जलाने पर यह एक सुखद बाल्समिक खुशबू छोड़ता है।

संब्रानी का उपयोग कहां किया जाता है?

इसका उपयोग आमतौर पर घर में दैनिक प्रार्थना के लिए, मंदिरों में भगवान को अर्पित करने के लिए, कार्यालयों में, ध्यान करते समय और त्योहारों में किया जाता है।

।। संभ्रानी के लाभ ।।

संभ्रानी जलाना अवसाद रोधी दवाओं के सेवन से १० गुना ज़्यादा कारगर है। संभ्रानी के औषधीय लाभों का एक लंबा इतिहास है और उनमें से कुछ इस प्रकार हैं

एंटी-इंफ्लेमेटरी

- त्वचा संक्रमण के इलाज के लिए इस्तेमाल किया जाता है
- यह घावों, अल्सर के उपचार को तेज करता है और एक्जिमा, सोरायसिस और चकत्ते से राहत देता है।
- अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी श्वसन स्थितियों से राहत प्रदान करने के लिए।
- यह सबसे अच्छा एंटीसेप्टिक और कीटाणुनाशक है। कीटाणुनाशक गुण खांसी और जुकाम जैसे संक्रमण पैदा करने वाले बैक्टीरिया को बाहर निकालने में भी मदद करेंगे।

- तनाव दूर करने में मदद करता है।
- यह भावनात्मक संतुलन को बढ़ावा देता है, उदासी, शोक और क्रोध को दूर करता है।
- इन कारणों से, महिलाओं और बच्चों के बालों को संभ्रानी की धूप से सुखाने की सलाह दी जाती है।

ABOUT SAMBRANI CUPS

।। भारतीय संस्कृति में संभ्रानी कप का इतिहास ।।

भारत समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं और रीति-रिवाजों का देश है जो पीढ़ियों से चले आ रहे हैं।

ऐसी ही एक परंपरा जो समय की कसौटी पर खरी उतरी है, वह है संभ्रानी कप का उपयोग। ये सुगंधित धूप के प्याले न केवल हवा को सुखदायक खुशबू से भर देते हैं, बल्कि भारतीय घरों में भी इनका गहरा महत्व है।

भारतीय संस्कृति में संभ्रानी कप की प्रासंगिकता उनकी सुगंधित खुशबू से कहीं बढ़कर है। ये कप हमारे दैनिक जीवन, आध्यात्मिक प्रथाओं और सांस्कृतिक परंपराओं का अभिन्न अंग बन गए हैं। उनके आध्यात्मिक महत्व से लेकर उनके चिकित्सीय गुणों तक, संभ्रानी कप भारतीय घरों में एक विशेष स्थान रखते हैं।

इस लेख में हम भारतीय संस्कृति में संभ्रानी कप के इतिहास और वे कैसे हमारे अनुष्ठानों और दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बन गए हैं, के बारे में जानेंगे।

।। संभ्रानी कप के अद्भुत लाभों की खोज करें ।।

संभ्रानी कप, जिसे बेंजोइन राल के रूप में भी जाना जाता है, स्टाइरेक्स वृक्ष से प्राप्त इस सुगंधित राल ने आध्यात्मिक अनुष्ठानों, औषधीय प्रथाओं और यहाँ तक कि इत्र बनाने में भी अपना स्थान पाया है। इस विस्तृत गाइड में, हम संब्रानी कप के अविश्वसनीय लाभों पर चर्चा करेंगे, इसके इतिहास, उपयोगों और आधुनिक समय के अनुप्रयोगों पर प्रकाश डालेंगे।

।। संब्रानी कप की उत्पत्ति ।।

संब्रानी कप का इतिहास बहुत समृद्ध है, जो भारत,

चीन और मध्य पूर्व जैसी प्राचीन सभ्यताओं से जुड़ा है। इसका नाम अक्सर दक्षिण भारतीय शहर संब्रानी से जुड़ा होता है, जो इस सुगंधित राल के उत्पादन के लिए जाना जाता है। राल को स्टाइरेक्स वृक्ष की छाल में चीरा लगाकर और उससे निकलने वाले सुगंधित रस को इकट्ठा करके काटा जाता है।

।। आध्यात्मिक अभ्यासों में संब्रानी कप ध्यान को बढ़ाता है ।।

संब्रानी कप का व्यापक रूप से ध्यान और योग अभ्यासों में उपयोग किया जाता है। इसकी शांत और स्थिर सुगंध मन की शांति और आध्यात्मिक विकास के लिए अनुकूल वातावरण बनाती है। मीठी सुगंध व्यक्तियों को अपने मन को केंद्रित करने में मदद करती है, जिससे गहन ध्यान की स्थिति प्राप्त करना आसान हो जाता है।

।। शुद्धिकरण और सफाई ।।

कई संस्कृतियों में, माना जाता है कि संब्रानी कप जलाने से आस-पास का वातावरण शुद्ध होता है और नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है। इसका उपयोग अक्सर धार्मिक समारोहों, अनुष्ठानों और आध्यात्मिक समारोहों के दौरान वातावरण को शुद्ध करने और पवित्रता की भावना पैदा करने के लिए किया जाता है।

।। संब्रानी कप के औषधीय गुण ।।

- **वसन स्वास्थ्य**

  संब्रानी कप के उल्लेखनीय लाभों में से एक श्वसन स्वास्थ्य पर इसका सकारात्मक प्रभाव है। जब जलाया जाता है, तो यह एंटीसेप्टिक और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण छोड़ता है जो अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी श्वसन समस्याओं को कम करने में मदद कर सकता है।

- **तनाव में कमी**

  संब्रानी कप की सुखदायक सुगंध तनाव और चिंता को कम करने पर गहरा प्रभाव डालती है। सुगंधित धुएँ को अंदर लेने से आराम और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा मिल सकता है।

- **दर्द से राहत**

संब्रानी कप अपने एनाल्जेसिक गुणों के लिए भी जाना जाता है। अरोमाथेरेपी में इस्तेमाल किए जाने या शीर्ष पर लगाने पर यह सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द और जोड़ों के दर्द से राहत प्रदान कर सकता है।

।। संब्रानी कप के आधुनिक अनुप्रयोग ।।

- **अरोमाथेरेपी**

समकालीन समय में, संब्रानी कप ने अरोमाथेरेपी में लोकप्रियता हासिल की है। मानसिक स्पष्टता, विश्राम और भावनात्मक संतुलन को बढ़ावा देने के लिए इसका उपयोग आवश्यक तेल डिफ्यूजर में किया जाता है।

- **परफ्यूमरी**

सांब्रानी कप में पाए जाने वाले सुगंधित यौगिकों ने इसे परफ्यूमरी में एक मूल्यवान घटक बना दिया है। इसकी मीठी, वेनिला जैसी खुशबू विभिन्न सुगंधों में गहराई और जटिलता जोड़ती है।

श्रीं

ABOUT PRODUCT

श्रीफ़ल कप शुद्ध प्राकृतिक हवन कप प्राकृतिक नारियल के खोल के कोयले से बनाए जाते हैं, जिसमें हर्बल रेजिन मिलाया जाता है और स्वयं सहायता महिला समूहों द्वारा हाथ से बनाया जाता है। हम सबसे पहले वनस्पति से प्राप्त रेजिन और जड़ी-बूटियों को साफ करते हैं, उन्हें कप बनाने के लिए नारियल के खोल से निर्मित कोयले के साथ मिलाते हैं। फिर हम उन्हें गुग्गल, लोबान, संभ्रानी हवन सामग्री और कपूर जैसे प्राकृतिक राल से भरते हैं। कप को जलाने के बाद आपके घर को फिर से भरने के लिए सुगंध केवल उन जड़ी-बूटियों और रेजिन की होती है जिन्हें आपने कप के अंदर रखा है। ये १०० प्रतिशत हर्बल, प्राकृतिक और सुरक्षित हवन कप उत्पादन प्रक्रिया में किसी भी रासायनिक यौगिक से मुक्त हैं।

- कप में कप की शुद्धता बनाए रखने के लिए तेल आधारित सुगंध होती है, सुगंध उस सामग्री पर निर्भर करती है जिसे आप इसमें डाल सकते हैं। हमारा उद्देश्य कम कीमत पर सबसे अच्छा सार, हरा और टिकाऊ उत्पाद प्रदान करना है।
- **सामान्य कप में पोटेशियम नाइट्रेट, रासायनिक सार, डाइथाइल फथैलेट, बेंजीन और टोल्यूनि जैसी महत्वपूर्ण अशुद्धियाँ होती हैं, जो एक बार जलने पर बड़ी मात्रा में खतरनाक पलीसाइक्लिक हाइड्रोकार्बन और सल्फर डाइआक्साइड छोड़ती हैं।**
- बेंजोइन संब्रानी का यह कप पूरी तरह से प्राकृतिक है और इसमें ऊपर बताए गए किसी भी रसायन का समावेश नहीं है।
- **नारियल के खोल के कोयले और रेजिन से बनाः** – यह प्रीमियम संब्रानी कप प्राचीन वैदिक अनुष्ठानों और प्राचीन आयुर्वेदिक शास्त्रों का एक बेहतरीन मिश्रण है। इसमें पवित्र नारियल के खोल का कोयला और प्राकृतिक रेजिन है यह एक सौंदर्यपूर्ण वातावरण बनाता है, अक्सीजन बढ़ाता है, अवश्य बीमारियों के प्रसार को समाप्त करता है और आपके परिसर में वास्तु दोष को रोकता है।
- **।। मंदिर के नारियल से बना और महिला नारियल रिसाइकिलर्स द्वारा हस्तनिर्मित ।।**
  ।। इसमें कोई हानिकारक या अवशिष्ट पदार्थ नहीं है ।।

प्राकृतिक नारियल + संब्रानी = कोको-श्रीफ़ल

श्रीं

COCO

श्रीफल

Magic

SAMBRANI CUPS

INSTANT BURN IN 10 SECONDS

1 Box : 12 Pouch | 1 Master Carton : 96 Box

।। निष्कर्ष ।।

निष्कर्ष में, सांब्रानी कप के अद्भुत लाभ आध्यात्मिक प्रथाओं में इसके समृद्ध इतिहास से लेकर अरोमाथेरेपी और परफ्यूमरी में इसके आधुनिक-दिन के अनुप्रयोगों तक फैले हुए हैं। यह सुगंधित राल समय की कसौटी पर खरा उतरा है, जो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए एक प्राकृतिक और समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। अपने दैनिक जीवन में सांब्रानी कप को शामिल करने से शांति, संतुलन और सकारात्मकता की भावना आ सकती है।

।। बुरी नज़र से बचाव ।।

।। नाकारात्मक उर्जा को बाहर करना ।।

।। साकारात्मक ध्यान में वृद्धि ।।

।। सुख समद्धि में वृद्धि ।।

।। पूजा-पाठ एवं यज्ञ मे प्रयोग ।।

।। अरोमा थेरेपी के लिए ।।

।। सुरक्षा के निर्देश ।।

1

पवित्र धुआँ बाहर निकलने दें

2

धुआँ सीधे अंदर न लें

3

उत्पाद की देखभाल : सूखी जगह पर स्टोर करें और पाउच को लंबे समय तक खुला न छोड़ें क्योंकि यह नमी को आकर्षित कर सकता है और जलने की समस्या पैदा कर सकता है।

4

व्यक्तिगत देखभाल : जलने के बाद एक घंटे तक कप को सीधे न छुएं। उपयोग करते समय या उपयोग समाप्त होने के बाद कप को संभालने के लिए चिमटा का प्रयोग करें।

5

।। कप जलाने का तरीका ।।

✗ ऐसे कप न जलाये

विकल्प १: कप को सीधे हाथ से न पकड़ें क्योंकि यह तुरंत जलता है और त्वचा को जला सकता है।

✓ ऐसे कप जलाये

विकल्प २: जलते समय कप को पकड़ने के लिए हमेशा चिमटा का उपयोग करें।

✓ ऐसे कप जलाये

विकल्प ३: इसे सतह/प्लेट पर रखें और फिर जला दें।

।। सार ।।

नारियल में किसका वास होता है?
नारियल को श्रीफल भी कहा जाता है क्योकि इसमें मां लक्ष्मी का वास माना गया है। इसके साथ ही नारियल में त्रिदेव यानी भगवान ब्रह्मा विष्णु और महेश का भी वास माना गया है।

Product By:

Smok-King Coal India

Contact Us: info@smokkingcoalindia.com
Web Site: www.smokkingcoalindia.com